

# THE ULURU STATEMENT FROM THE HEART IN HINDI

हम, दक्षिणी आकाश के नीचे सभी स्थानों से आकर साल 2017 के राष्ट्रीय संवैधानिक सम्मेलन में एकत्र हुए थे। हृदय से ये अभिव्यक्त करते हैं।

हमारी आदवासी और टोरेस स्ट्रेट आइलैंडर जनजातियाँ ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप और उसके आस पास के द्वीपों के पहले संप्रभु राष्ट्र थे। और इस जगह पर हमारा अपने कानून और रीत-रवाजों के मुताबिक अधिभार था।

यह हमारे पूर्वजों ने इसकी उत्पत्ति से चली आ रही हमारी संस्कृति के मुताबिक ककया था। ये अनंत प्राचीन काल से चले आ रहे सामान्य कानून और 60,000 साल पुराने ज्ञान के अनुसार था।

यह संप्रभुता एक आध्यात्मिक धारणा है: यह भूमि या प्रकृति माता और उन आदवासी (Aboriginal) एवं टोरेस स्ट्रेट आइलैंड के लोगों के चिह्न पैतृक संधि है, जो कक उससे पैदा हुए थे। उससे जुड़े रहे हैं और तज्जुह एक ददन हमारे पूर्वजों के साथ एकजुट होने के भए वापस चले जाना है।

यह संधि-सूत्र भट्टी के स्वाभिमत्त्व का आधार है या हित शब्दों में संप्रभुता का। इसे कभी भी त्याग या समाप्त नहीं ककया गया है और यह क्राउन की संप्रभुता के साथ सह-अस्तित्व में है।

यह ककसी और रूप में हो भी सके है कक उन लोगों के पास यह भूमि साठ सहस्राब्दियों से थी और यह पतवत्र कडी मात्र तपछले दो सौ वर्षों में तवश्व-इतहास से गायि गई?

हमारा मानना है कक पयावत संवैधानिक परवतन और संरचनात्मक सुधार के साथ यह प्राचीन संप्रभुता ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीयता की पूव अभिव्यक्त के रूप में प्रकाशमान हो सकती है।

आनुपानक रूप से, इस ग्रह पर कारावासों में रखे गए लोगों में हमारी संख्या ससि अधक है। हम स्वभावतः अपराधी लोग नहीं हैं। हमारे चिह्नों को अभूतपूर्व संख्या में उनके परवारों से अलग कर दया गया है।

यह इसभए नहीं है कक हमें उनसे कोई प्रेम नहीं है। और हमारे असंख्य युवा कारावासों में मुरझा रहे हैं। जकिक वे हमारे भूतवष्ट्य की आशा होने चादहए।

हमारे संकट के ये पहलू स्पष्ट रूप तिते हैं कक हमारी समस्या संरचनात्मक तौर पर ककतनी जदतल है।

यह हमारी शक्तहीनता की पीडा है।

अपने लोगों को समथव ताने और हमारे अपने देश में एक उधत स्थान प्राप्त करने के भए हम संवैधानिक सुधार चाहते हैं।

जहमारा अपने भाग्य पर अधिभार होगा तो हमारे चिह्ने फले-फू लेंगे। वे दो तरह की दुनया में तवचरण कर पाएंगे और उनकी संस्कृति उनके देश के भए उपहार होगी।

हम फस्टव नेशन्स की आवाज की स्थापना और उसे संतवधान में प्रनतष्टातपत ककए जाने की माँग करते हैं।

मैकराटा हमारे एजेंडे का चरम बदि है: संघर्ष के दि एक साथ आना ।

यह ऑस्ट्रेलिया के लोगों के साथ ननष्टपि और सत्यतापूव संधि और हमारे चिह्नों के भए न्याय तथा स्वभाग्य-ननणव पर आधारित हित भूतवष्ट्य के भए हमारी आर्काओं को अभिव्यक्त करता है।

हम सरकारों और फस्टव नेशन्स के चिह्न समझौते की प्रकक्रया की ननगरानी के भए और अपने इतहास के रि में सच्चाई ताने के भए मैकराटा आयोग चाहते हैं।

1967 में हमारी गणना हुई थी, 2017 में हम चाहते हैं कक हमें सुना जाना चादहए। हम सि के प छोड रहे हैं और इस पूरे तवशाल देश की अपनी लमी यात्रा आरम्भ कर रहे हैं। हित भूतवष्ट्य के भए ऑस्ट्रेलियाई लोगों के इस आंदोलन में अपने साथ चलने के भए हम आपको आमंत्रित करते हैं।



@UluruStatement



@UluruStatement



@UluruStatement

Visit [UluruStatement.org](https://UluruStatement.org) for more information



# THE ULURU STATEMENT FROM THE HEART

## IN ENGLISH

We, gathered at the 2017 National Constitutional Convention, coming from all points of the southern sky, make this statement from the heart:

Our Aboriginal and Torres Strait Islander tribes were the first sovereign Nations of the Australian continent and its adjacent islands, and possessed it under our own laws and customs. This our ancestors did, according to the reckoning of our culture, from the Creation, according to the common law from 'time immemorial', and according to science more than 60,000 years ago.

This sovereignty is a spiritual notion: the ancestral tie between the land, or 'mother nature', and the Aboriginal and Torres Strait Islander peoples who were born therefrom, remain attached thereto, and must one day return thither to be united with our ancestors. This link is the basis of the ownership of the soil, or better, of sovereignty. It has never been ceded or extinguished, and co-exists with the sovereignty of the Crown.

How could it be otherwise? That peoples possessed a land for sixty millennia and this sacred link disappears from world history in merely the last two hundred years?

With substantive constitutional change and structural reform, we believe this ancient sovereignty can shine through as a fuller expression of Australia's nationhood.

Proportionally, we are the most incarcerated people on the planet. We are not an innately criminal people. Our children are alienated from their families at unprecedented rates. This cannot be because we have no love for them. And our youth languish in detention in obscene numbers. They should be our hope for the future.

These dimensions of our crisis tell plainly the structural nature of our problem. This is *the torment of our powerlessness*.

We seek constitutional reforms to empower our people and take a rightful place in our own country. When we have power over our destiny our children will flourish. They will walk in two worlds and their culture will be a gift to their country.

We call for the establishment of a First Nations Voice enshrined in the Constitution.

Makarrata is the culmination of our agenda: the coming together after a struggle. It captures our aspirations for a fair and truthful relationship with the people of Australia and a better future for our children based on justice and self-determination.

We seek a Makarrata Commission to supervise a process of agreement-making between governments and First Nations and truth-telling about our history.

In 1967 we were counted, in 2017 we seek to be heard. We leave base camp and start our trek across this vast country. We invite you to walk with us in a movement of the Australian people for a better future.



@UluruStatement



@UluruStatement



@UluruStatement

Visit [UluruStatement.org](https://UluruStatement.org) for more information